नमाज़

में

आप क्या पढ़ते हैं?

मौलाना सय्यद अबुल-आला मौदूदी

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान बहुत रहमवाला है।"

नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?

भाइयो! 'इबादत' नामक पुस्तिका में आपको बता चुका हूँ कि नमाज़ किस तरह आदमी को अल्लाह की इबादत, यानी बन्दगी और इताअत, के लिए तैयार करती है। इस सिलसिले में जो कुछ मैंने कहा था, उससे आपने अन्दाज़ा कर लिया होगा कि जो आदमी नमाज़ को सिर्फ़ फ़र्ज़ और ख़ुदा का हुक्म जानकर क़ायदे के साथ अदा करता रहे, वह अगर नमाज़ की दुआओं का मतलब न समझता हो तब भी उसके अन्दर ख़ुदा का ख़ौफ़ और उसके हाज़िर व नाज़िर होने का यक़ीन और उसकी अदालत में एक रोज़ हाज़िर होने का एतिक़ाद हर वक़्त ताज़ा होता रहता है। उसके दिल में यह अक़ीदा हमेशा ज़िन्दा रहता है कि वह ख़ुदा के सिवा किसी और बन्दा नहीं और ख़ुदा ही उसका असली बादशाह और हाकिम है। उसके अन्दर फ़र्ज़ को पहचानने की आदत और ख़ुदा के हुक्मों को बजा लाने के लिए मुस्तैदी पैदा होती है। उसमें वे ख़ूबियाँ अपने आप पैदा होने लगती हैं जो इनसान की सारी ज़िन्दगी को ख़ुदा की बन्दगी व इबादत बना देने के लिए ज़रूरी

हैं।

अब मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि अगर आदमी नमाज़ को समझकर अदा करे और नमाज़ पढ़ते वक़्त यह भी जानता रहे कि वह क्या पढ़ रहा है तो उसके ख़यालों और उसकी आदतों और ख़सलतों पर कितना ज़बरदस्त असर पड़ेगा, उसके ईमान की ताक़त कितनी बढ़ती चली जाएगी और उसकी ज़िन्दगी का रंग कैसा पलट जाएगा।

अज़ान और उसके असरात

सबसे पहले अज़ान को लीजिए। दिन में पाँच वक़्त आपको यह कहकर पुकारा जाता है—

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर। (दो बार)

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है।

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाह। (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं, कोई बन्दगी का हक़दार नहीं।

अश्हदु-अन-न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह। (दो बार)

मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद *(सल्ल.)* अल्लाह के रसूल हैं।

हय-य अलस्सलाह। (दो बार)

आओ नमाज़ के लिए।

हय-य अलल फ़लाह। (दो बार)

आओ उस काम के लिए जिसमें भलाई ही भलाई है।

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर।

अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह सबसे बड़ा है।

ला इला-ह इल्लल्लाह

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं।

देखिए यह कैसी ज़बरदस्त पुकार है। हर रोज़ पाँच बार यह आवाज़ किस तरह आपको याद दिलाती है कि 'ज़मीन में जितने बड़े ख़ुदाई के दावेदार नज़र आते हैं, सब झूठे हैं। ज़मीन व आसमान में एक ही हस्ती है जिसके लिए बड़ाई है, और वही इबादत के लायक़ है। आओ उसकी इबादत करो, उसी की इबादत में तुम्हारे लिए दुनिया और आख़िरत की भलाई है।' कौन है जो इस आवाज़ को सुनकर हिल न जाएगा? कैसे मुमकिन है कि जिसके दिल में ईमान हो, वह इतनी बड़ी गवाही और ऐसी ज़बरदस्त पुकार सुनकर अपनी जगह बैठा रह जाए और अपने मालिक के आगे सिर झुकाने के लिए दौड़ न पड़े!

वुज़ू

इस आवाज़ को सुनकर आप उठते हैं और सबसे पहले अपना जायज़ा लेकर देखते हैं कि मैं पाक हूँ या नापाक, मेरे कपड़े पाक हैं या नहीं, मेरा वुज़ू है या नहीं। मानो आपको इस बात का एहसास है कि दोनों जहान के बादशाह के दरबार में हाज़िरी का मामला दुनिया के दूसरे सब मामलों से अलग है। दूसरे काम तो हर हाल में किए जा सकते हैं। मगर यहाँ जिस्म और लिबास की पाकी और इस पाकी पर और ज़्यादा पाकी (यानी वुज़ू) के बग़ैर हाज़िरी देना सख़्त बेअदबी है। इस एहसास के साथ आप पहले अपने पाक होने का इतमीनान करते हैं और फिर वुज़ू शुरू कर देते हैं। इस वुज़ू के दौरान में अगर आप अपना मुँह और हाथ-पैर धोने के साथ-साथ अल्लाह का ज़िक्र करते रहें और फ़ारिग़ होकर वह दुआ पढ़ें जो अल्लाह के रसूल *(सल्ल.)* ने सिखाई है तो सिर्फ़ आपके मुँह, हाथ और पैर ही न धुलेंगे बल्कि साथ-साथ आपका दिल भी धुल जाएगा। वह दुआ यह है—

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरी-क लहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन' अब्दुहू व रसूलुहू। अल्लाहुम्मज अलनी मिनत्तव्वाबी-न, वज अलनी मिनल मु-त-तहहिरीन।

"मैं गवाही देता हूँ कि अकेले लाशरीक ख़ुदा के सिवा कोई माबूद नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद *(सल्ल.)* अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं। ऐ अल्लाह! मुझे तौबा करनेवालों में शामिल कर और मुझे पाकीज़गी इख़्तियार करनेवाला बना।"

नीयत

इसके बाद आप नमाज़ के लिए खड़े होते हैं। मुँह क़िबले के सामने है। पाक-साफ़ होकर दोनों जहान के बादशाह के दरबार में हाज़िर हैं। सबसे पहले आपकी ज़बान से ये अल्फ़ाज़ निकलते हैं– 'अल्लाहु अकबर' (अल्लाह सबसे बड़ा है)। इस ज़बरदस्त हक़ीक़त का इक़रार करते हुए आप कानों तक हाथ उठाते हैं, मानो दुनिया और दुनिया की सभी चीज़ों से दस्तबरदार हो रहे हैं। फिर हाथ बाँध लेते हैं, मानो अब आप बिलकुल अपने बादशाह के सामने हाथ बाँधे अदब के साथ खड़े हैं। इसके बाद आप अर्ज़ करते हैं–

तसबीह

सुब्हा-न-क अल्लाहुम-म व बि हमदि-क, व तबा-र कस्मु-क, व त-आला जद्दु-क व ला इला-ह ग़ैरु-क।

"तेरी पाकी बयान करता हूँ ऐ अल्लाह! और वह भी तेरी तारीफ़ के साथ। बड़ी बरकतवाला है तेरा नाम; सबसे बुलन्द व बरतर है तेरी बुज़ुर्गी और कोई माबूद नहीं तेरे सिवा।"

तअव्वुज़

अ-ऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम।

"खुदा की पनाह माँगता हूँ मैं शैतान मरदूद की दरअन्दाज़ी और शरारत से।"

बसमला (तस्मिया)

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

"शुरू करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो निहायत मेहरबान और रहम फ़रमानेवाला है।"

हम्द (सूरा-फ़ातिहा)

अल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

"तारीफ़ खुदा के लिए है जो सारे जहानवालों का पालनहार है।"

अर्रहमानिर्रहीम।

"निहायत रहमतवाला, बड़ा मेहरबान है।"

मालिकि यौमिद्दीन।

"रोज़े आख़िरत का मालिक है (जिसमें कर्मों का

फ़ैसला किया जाएगा और हर एक को उसके किए का बदला मिलेगा)।"

इय्या-क नअबुदु व इय्या-क नस्तईन।

"मालिक! हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद माँगते हैं।"

इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम।

"हमको सीधा रास्ता दिखा।"

सिरातल लज़ी-न अनअम-त अलैहिम।

"ऐसे लोगों का रास्ता जिनपर तूने फ़ज़्ल किया और इनाम फ़रमाया।"

ग़ैरिल मग़ज़ूबि अलैहिम व लज़्ज़ाल्लीन।

"जिनपर तेरा ग़ज़ब नाज़िल नहीं हुआ और जो भटके हुए लोग नहीं हैं।"

आमीन!

"ख़ुदाया ऐसा ही हो! मालिक हमारी इस दुआ को क़बूल कर।" (क़ुरआन, 1:17)

इसके बाद आप क़ुरआन की कुछ आयतें पढ़ते हैं, जिनमें से हर एक में अमृत भरा हुआ है, नसीहत है, इबरत है, सबक़ है और उसी सीधे रास्ते की हिदायत है, जिसके लिए सूरा फ़ातिहा में आप दुआ कर चुके थे। मिसाल के तौर पर क़ुरआन की यह सूरा—

अलअस्र

वल असरि इन्नल इनसा-न लफ़ी ख़ुस्र।

"ज़माने की क़सम, इनसान घाटे में है।"

इल्लल लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति,

"मगर घाटे से बचे हुए सिर्फ़ वे लोग हैं जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए।"

व तवासौ बिल हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र।

"और जिन्होंने एक-दूसरे को हक़ पर चलने की हिदायत की और हक़ पर जमे रहने के लिए उभारते रहे।" (क़ुरआन, 103 : 1-3)

इससे यह सबक़ मिलता है कि तबाही और नामुरादी से इनसान बस इसी तरह बच सकता है कि ईमान लाए और नेक अमल करे और सिर्फ़ इतना ही काफ़ी नहीं, बल्कि ईमानदारों की एक जमाअत ऐसी होनी चाहिए जो दीन पर क़ायम होने और क़ायम रहने में एक-दूसरे की मदद करती रहे।

या मिसाल के तौर पर क़ुरआन की यह सूरा—

अल-माऊन

अ-र-ऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन।

"तूने देखा उस शख़्स को जो बदले के दिन को

नहीं मानता, वह कैसा आदमी होता है?"

फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुऊउल यतीम।

"ऐसा ही आदमी यतीम को धुत्कारता है।"

व ला यहुज़्ज़ु अला तआमिल मिसकीन।

"और मिसकीन को खुद खाना खिलाना तो दूर रहा, दूसरों से भी यह कहना पसन्द नहीं करता कि ग़रीब को खाना खिला दो।"

फ़वैलुल लिल् मुसल्लीनल्लज़ी-न हुम अन सलातिहिम साहून, अल्लज़ी-न हुम युराऊन, व यम्-न ऊनल् माऊन।

"तबाही है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो (आख़िरत के दिन पर यक़ीन नहीं रखते, इसलिए) नमाज़ से ग़फ़लत करते हैं और पढ़ते भी हैं तो सिर्फ़ दिखावे के लिए, और उनके दिल ऐसे छोटे हैं कि ज़रा-ज़रा सी चीज़ें हाजतमन्दों को देते हुए भी उनका दिल दुखता है।" (क़ुरआन, 107 : 1-7)

इससे यह सबक़ मिलता है कि आख़िरत का यक़ीन इस्लाम की जान है। इसके बिना आदमी कभी उस रास्ते पर चल ही नहीं सकता जो खुदा का सीधा रास्ता है।

मिसाल के तौर पर क़ुरआन की यह सूरा देखिए—

अल-हु-म-ज़ह

वैलुल्लिकुल्लि हु-म-ज़तिल लु-म-ज़ह।

"अफ़सोस है उस शख़्स की हालत पर जो लोगों के ऐब ढूँढता और उनपर आवाज़े (फब्तियाँ) कसता है।"

अल्लज़ी ज-म-अ मालौं व अद्द-दह।

"रुपया जमा करता है और गिन-गिनकर रखता है।"

यह-सबु अन-न मा-लहू अख़्-ल-दह।

"अपने दिल में समझता है कि उसका माल हमेशा रहेगा।"

कल्ला ल-युम बज़न-न फ़िल हु-त-मह।

"हरगिज़ नहीं, वह एक दिन ज़रूर (मरेगा और) हुतमा में डाला जाएगा।"

वमा अदरा-क मल हु-त-मह।

"और तुम्हें क्या मालूम है कि हुतमा क्या चीज़ है?"

नारुल्लाहिल मू-क़्-द-तुल्लती तत्तलिउ़ अलल अफ़-इदह।

"अल्लाह की भड़काई हुई आग जिसकी लपटें

दिलों पर छा जाती हैं।"

इन्नहा अलैहिम मुअ्स-द-तुन फ़ी अ-म-दिम मुमद्-द-दह।

"वह ऊँचे-ऊँचे सुतून जैसे शोलों की सूरत में उनको घेर लेगी।" (क़ुरआन, 104:1-9)

ग़रज़ आप क़ुरआन पाक की जितनी सूरतें या आयतें नमाज़ में पढ़ते हैं वे कोई न कोई ऊँचे दर्जे की नसीहत या हिदायत आपको देती हैं और आपको बताती हैं कि ख़ुदा के अहकाम (आदेश-निर्देश) क्या हैं, जिनके मुताबिक़ आपको दुनिया में चलना चाहिए।

रुकू

इन हिदायतों को पढ़ने के बाद आप **अल्लाहु अकबर** (अल्लाह सबसे बड़ा है।) कहते हुए रुकू करते हैं। घुटनों पर हाथ रखकर अपने मालिक के आगे झुकते हैं और बार-बार कहते हैं :

सुब्हा-न रब्बियल अज़ीम।

"पाक है मेरा पालनहार जो बड़ा बुज़ुर्ग है।"

फिर सीधे खड़े होते हुए कहते हैं :

समि अल्लाहु लिमन हमिदह।

"अल्लाह ने सुन ली उस शख़्स की बात जिसने

उसकी तारीफ़ बयान की।"

और फिर खड़े होकर कहते हैं :

रब्बना लकल हम्द।

"ऐ हमारे रब! तेरे ही लिए तारीफ़ है।"

सजदा

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सजदे में गिर जाते हैं और बार-बार कहते हैं :

सुब्हा-न रब्बियल आला।

"पाक है मेरा पालनहार जो सबसे आला व बरतर है।"

अत्तहिय्यात

फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए सिर उठाते हैं और बड़े अदब से बैठकर यह पढ़ते हैं :

अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस्स-लवातु वत्तय्यिबात।

"हमारी सलामियाँ, हमारी नमाज़ें और सारी पाकीज़ा बातें अल्लाह के लिए हैं।"

अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-र-कातुह।

"सलाम आप पर ऐ नबी! और अल्लाह की

रहमत और बरकतें।"

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस -सालिहीन।

"सलामती हो हमपर और अल्लाह के सब नेक बन्दों पर।"

अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन-न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद *(सल्ल.)* अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।"

यह शहादत देते वक़्त आप शहादत की उँगली उठाते हैं, क्योंकि यह नमाज़ में आपके अक़ीदे का एलान है और उसको ज़बान से अदा करते वक़्त ख़ास तौर पर ध्यान और ज़ोर देने की ज़रूरत है। इसके बाद आप दुरूद पढ़ते हैं—

दुरूद

अल्लाहुम-म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवँ व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लै-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद। अल्लाहुम-म बारिक अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिवँ व

अला आलि मुहम्मदिन कमा बारक-त अला इबराही-म व अला आलि इबराही-म इन्न-क हमीदुम्मजीद।

"खुदाया! रहमत फ़रमा हमारे सरदार और मौला मुहम्मद *(सल्ल॰)* और उनकी आल पर, जिस तरह तूने रहमत फ़रमाई इबराहीम और आले-इबराहीम पर, बेशक तू बेहतरीन ख़ूबियोंवाला और बुज़ुर्ग है। और ख़ुदाया! बरकत नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार और मौला मुहम्मद *(सल्ल॰)* और उनकी आल पर, जिस तरह तूने बरकत नाज़िल फ़रमाई इबराहीम पर, बेशक तू बेहतरीन ख़ूबियोंवाला और बुज़ुर्ग है।"

यह दुरूद पढ़ने के बाद आप अल्लाह से दुआ करते हैं—

अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु बि-क मिन अज़ाबि जहन्न-म व अऊज़ु बि-क मिन अज़ाबिल क़बरि व अऊज़ु बि-क मिन फित-नतिल मसीहिद-दज्जालि व अऊज़ु बि-क मिन फ़ित-नतिल महया वल ममाति। व अऊज़ु बि-क मिनल मा-स-मि वल मग़रम।

"ख़ुदाया! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ जहन्नम के अज़ाब से, और तेरी पनाह माँगता हूँ क़ब्र के

अज़ाब से, और तेरी पनाह माँगता हूँ उस गुमराह करनेवाले दज्जाल के फ़ितने से जो ज़मीन पर छा जानेवाला है, और तेरी पनाह माँगता हूँ ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने से। खुदाया! मैं तेरी पनाह माँगता हूँ बुरे आमाल की ज़िम्मेदारी और क़र्ज़दारी से।"

सलाम

यह दुआ पढ़ने के बाद आपकी नमाज़ पूरी हो गई। अब आप मालिक के दरबार से वापस होते हैं, और वापस होकर पहला काम क्या करते हैं? यह कि दाएँ और बाएँ मुड़कर तमाम हाज़िरीन और दुनिया की हर चीज़ के लिए सलामती और रहमत की दुआ करते हैं—

अस्सलामु अलैकुम व रह्मतुल्लाह।

"आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत।"

मानो, यह वह ख़ुशख़बरी है जो ख़ुदा के दरबार से पलटते हुए आप दुनिया के लिए लाए हैं।

यह है वह नमाज़ जो आप सुबह उठकर दुनिया के काम-काज में लगने से पहले पढ़ते हैं। फिर कुछ घण्टे काम-काज में लगे रहने के बाद दोपहर को ख़ुदा के दरबार में हाज़िर होकर दोबारा यही नमाज़ अदा करते

हैं। फिर कुछ घण्टों के बाद तीसरे पहर को फिर यही नमाज़ पढ़ते हैं। फिर कुछ घण्टे और मशग़ूल रहने के बाद शाम को इसी नमाज़ को दुहराते हैं। फिर दुनिया के कामों से छुट्टी पाकर सोने से पहले आख़िरी बार अपने मालिक के सामने जाते हैं। इस आख़िरी नमाज़ का ख़ात्मा वित्र पर होता है, जिसकी तीसरी रकअ़त में आप एक बहुत बड़ा इक़रारनामा अपने मालिक के सामने पेश करते हैं। यह दुआ-ए-क़ुनूत है। क़ुनूत के मानी हैं 'ख़ुदा के आगे ज़िल्लत व इनकिसारी, इताअत और बन्दी का इक़रार।' यह इक़रार आप किन लफ़्ज़ों में करते हैं ज़रा ध्यान से सुनिए :

दुआए-क़ुनूत

अल्लाहुम-म इन्ना नस्तईनु-क व नस्तहदी-क व नस्तग़फ़िरु-क व नुअ्मिनु बि-क व न-त-वक्कलु अलै-क व नुस्नी अलै-कल ख़ै-र कुल्लहू।

"ख़ुदाया! हम तुझसे मदद माँगते हैं, तुझसे ही हिदायत माँगते हैं, तुझसे गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं, तुझपर ईमान लाते हैं, तेरे ही ऊपर भरोसा करते हैं और सारी तारीफ़ तेरे ही लिए ख़ास करते हैं।"

व नशकुरु-क वला नकफ़ुरु-क व नख़्लउ व

नतरुकु मय्यफ़्जुरु-क।

"हम तेरा शुक्र अदा करते हैं, नाशुक्री नहीं करते। हम हर उस शख़्स को छोड़ देंगे और उससे ताल्लुक़ ख़त्म कर देंगे जो तेरा नाफ़रमान हो।"

अल्लाहुम-म इय्या-क नअ्बुदु व ल-क नुसल्ली व नस्जुदु व इलै-क नसआ व नहफ़िदु।

"ख़ुदाया, हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तेरे ही लिए नमाज़ पढ़ते और सज्दा करते हैं और हमारी सारी कोशिशें और सारी दौड़-धूप तेरी ही ख़ुशी के लिए है।"

व नरजू रह-म-त-क व नख़्शा अज़ा-ब-क इन्न-न-अज़ा-ब-क बिल कुफ़्फ़ारि मुलहिक़।

"और हम तेरी ही रहमत के उम्मीदवार हैं और तेरे अज़ाब से डरते हैं। यक़ीनन तेरा सख़्त अज़ाब ऐसे लोगों पर पड़ेगा जो नाफ़रमान हैं।"

नमाज़ और तामीरे सीरत

मुसलमान भाइयो! ज़रा सोचिए, जो शख़्स दिन में पाँच बार अज़ान की यह आवाज़ सुनता हो और समझता हो कि कितनी बड़ी चीज़ की शहादत दी जा रही है और कैसे ज़बरदस्त बादशाह के हुज़ूर में बुलाया

जा रहा है, और जो शख़्स हर बार इस पुकार को सुनकर अपने सारे काम-काज छोड़ दे और उस पाक ज़ात की तरफ़ दौड़े, जिसे वह अपना और सारी कायनात का मालिक जानता है, और जो शख़्स हर नमाज़ से पहले अपने जिस्म और दिल को वुज़ू करके पाक करे, और जो शख़्स कई-कई बार नमाज़ में वे सारी बातें समझ-बूझकर अदा करे जो अभी आपके सामने मैंने बयान की हैं, तो कैसे मुमकिन है कि उसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ पैदा न हो? उसको ख़ुदा के हुक्मों के ख़िलाफ़ चलते हुए शर्म न आए? उसका दिल गुनाहों और बदकारियों के काले धब्बे लेकर बार-बार ख़ुदा के सामने हाज़िर होते हुए लरज़ न उठे? किस तरह मुमकिन है कि आदमी नमाज़ में ख़ुदा की बन्दगी का इक़रार और उसकी इताअत का इक़रार, उसके मालिके-यौमिद्दीन होने का इक़रार करके जब अपने काम-काज की तरफ़ वापस आए तो झूठ बोले, बेईमानी करे, लोगों के हक़ मारे, रिश्वत खाए और खिलाए, सूद खाए और खिलाए, ख़ुदा के बन्दों को दुख पहुँचाए, फ़ह्श और बेहयाई और बदकारी करे और फिर इन सब आमाल का बोझ लादकर दोबारा ख़ुदा के सामने हाज़िर होने और इन्हीं सब बातों का इक़रार करने की हिम्मत कर सके? हाँ, यह कैसे मुमकिन है कि आप जान-बूझकर ख़ुदा से छत्तीस बार इक़रार करें कि हम

तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं और फिर खुदा के सिवा दूसरों की बन्दगी करें और दूसरों के आगे मदद के लिए हाथ फैलाएँ। एक बार आप इक़रार करके उसके ख़िलाफ़ चलेंगे तो दूसरी बार खुदा के दरबार में जाते हुए आपका ज़मीर मलामत करेगा और शर्मिन्दगी पैदा होगी, दूसरी बार फिर ख़िलाफ़ चलेंगे तो और ज़्यादा शर्म आएगी और ज़्यादा दिल अन्दर से लानत भेजेगा। सारी उम्र यह कैसे हो सकता है कि रोज़ाना पाँच-पाँच बार नमाज़ पढ़ें और फिर भी आपके आमाल न सुधरें, आपके अख़लाक़ की इसलाह न हो और आपकी ज़िन्दगी की काया न पलटे? इसी लिए अल्लाह तआला ने नमाज़ की यह ख़ासियत बयान की है—

> "बेशक नमाज़ आदमी को बेहयाई और बदकारी से रोकती है।" (क़ुरआन, 29:45)

लेकिन अगर कोई ऐसा है कि इतनी ज़बरदस्त इसलाह करनेवाली चीज़ से भी उसकी इसलाह नहीं होती तो यह उसके तीनत (आदत, स्वभाव) की ख़राबी है, नमाज़ की ख़राबी नहीं। पानी और साबुन की ख़ूबी मैल को साफ़ करना है, लेकिन अगर कोयले की स्याही इससे दूर न हो तो यह पानी और साबुन का क़ुसूर नहीं, इसकी वजह कोयले की अपनी स्याही है।

भाइयो! आपकी नमाज़ों में एक बहुत बड़ी कमी है, और वह यह है कि आप नमाज़ में जो कुछ पढ़ते हैं उसको समझते नहीं। अगर आप थोड़ा-सा वक़्त लगाएँ तो इन सारी दुआओं का मतलब अपनी ज़बान में याद कर सकते हैं। इससे यह फ़ायदा होगा कि आप जो कुछ पढ़ेंगे उसे समझते भी जाएँगे।

नमाज़ जमाअत के साथ

मुसलमान भाइयो! पिछले खुतबे में तो मैंने आपके सामने सिर्फ़ नमाज़ के फ़ायदे बयान किए थे, जिनसे आपको अन्दाज़ा हो चुका होगा कि यह इबादत अपनी जगह पर कैसी ज़बरदस्त चीज़ है, किस तरह आदमी में बन्दगी का कमाल पैदा करती है और किस तरह उसको बन्दगी का हक़ अदा करने के क़ाबिल बनाती है। अब मैं आपको जमाअत से नमाज़ पढ़ने के फ़ायदे बताना चाहता हूँ जिन्हें सुनकर आप अन्दाज़ा करेंगे कि अल्लाह तआला ने अपनी मेहरबानी से किस तरह एक ही चीज़ में हमारे लिए सारी नेमतें इकट्ठा कर दी हैं। अव्वल तो नमाज़ खुद ही क्या कम थी कि इसके साथ जमाअत का हुक्म देकर इसकी अहमियत और बढ़ा दी गई और इसके अन्दर वह ताक़त भर दी गई है जो इनसान की काया पलट देने में अपना जवाब नहीं रखती।

नमाज़ किन ख़ूबियों को पैदा करती है?

मैं पहले आप से यह कह चुका हूँ कि ज़िन्दगी में हर वक़्त अपने आपको ख़ुदा का बन्दा समझना, फ़रमाँबरदार ग़ुलाम की तरह मालिक की मरज़ी का ताबेदार बनकर रहना और मालिक का हुक्म पूरा करने के लिए हर वक़्त तैयार रहना असली इबादत है और

नमाज़ इसी इबादत के लिए इनसान को तैयार करती है। यह भी आपको बता चुका हूँ कि इस इबादत के लिए इनसान में जितनी ख़ूबियों की ज़रूरत है वे सब नमाज़ पैदा करती है। बन्दगी का एहसास, ख़ुदा और उसके रसूल *(सल्ल.)* और उसकी किताब पर ईमान, आख़िरत का यक़ीन, ख़ुदा का ख़ौफ़, ख़ुदा को ग़ैब की ख़बर रखनेवाला समझना और उसको हर वक़्त अपने से क़रीब समझना, ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी के लिए हर हालत में तैयार रहना, ख़ुदा के हुक्मों से वाक़िफ़ होना, ये और ऐसी ही तमाम ख़ूबियाँ 'नमाज़' आदमी के अन्दर पैदा कर देती है जो उसको सही मानों में ख़ुदा का बन्दा बनाने के लिए ज़रूरी हैं।

मुकम्मल बन्दगी तन्हा मुमकिन नहीं

मगर आप ज़रा ग़ौर से देखें तो आपको मालूम हो जाएगा कि इनसान अपनी जगह चाहे वह कितना ही कामिल हो, वह ख़ुदा की बन्दगी का पूरा हक़ अदा नहीं कर सकता जब तक कि दूसरे बन्दे भी उसके मददगार न हों। ख़ुदा के तमाम हुक्मों को पूरा नहीं कर सकता जब तक कि वे बहुत-से लोग, जिनके साथ रात-दिन उसका रहना-सहना है, जिनसे हर वक़्त उसको मामला पेश आता है, इस फ़रमाँबरदारी में उसका साथ न दें। आदमी दुनिया में अकेला तो पैदा नहीं हुआ है, न ही अकेला रहकर कोई काम कर सकता है। उसकी सारी

ज़िन्दगी अपने भाई-बंधुओं, दोस्तों और पड़ोसियों, मामलादारों और ज़िन्दगी के बेशुमार साथियों से हज़ारों क़िस्म के ताल्लुक़ात में जकड़ी हुई है। अल्लाह के अहकाम भी तनहा एक आदमी के लिए नहीं हैं, बल्कि इन्हीं ताल्लुक़ात को ठीक करने के लिए हैं। अब अगर ये सब लोग ख़ुदा के हुक्म बजा लाने में एक-दूसरे का साथ दें और एक-दूसरे की मदद करें तो सब फ़रमाँबरदार बन्दे बन सकते हैं। और अगर सब नाफ़रमानी पर तुले हुए हों या उनके ताल्लुक़ात इस क़िस्म के हों कि ख़ुदा के हुक्म बजा लाने में एक-दूसरे की मदद न करें तो एक अकेले आदमी के लिए नामुमकिन है कि वह अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदा के क़ानून पर ठीक-ठीक अमल कर सके।

तन्हा शैतान का मुक़ाबला मुमकिन नहीं

इसके साथ जब आप क़ुरआन को ग़ौर से पढ़ेंगे तो आपको मालूम होगा कि ख़ुदा का हुक्म सिर्फ़ यही नहीं है कि आप ख़ुद अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दे बनें, बल्कि साथ-साथ यह हुक्म भी है कि दुनिया को ख़ुदा का ताबेअ् और फ़रमाँबरदार बनाएँ, दुनिया में ख़ुदा के क़ानून को फैलाएँ और जारी करें। शैतान का क़ानून जहाँ-जहाँ चल रहा हो उसको मिटा दें और उसकी जगह 'अल्लाह वह्दहू ला शरी-क लहू' के क़ानून की हुकूमत क़ायम करें। यह ज़बरदस्त ख़िदमत जो अल्लाह ने

आपके सुपुर्द की है, उसको एक अकेला मुसलमान अंजाम नहीं दे सकता। और अगर करोड़ों मुसलमान भी हों, मगर अलग-अलग रहकर कोशिश करें, तब भी वे शैतान के बन्दों की एक मुनज़्ज़म ताक़त को नीचा नहीं दिखा सकते। इसके लिए ज़रूरत है कि मुसलमान एक जत्था बनें, एक-दूसरे के मददगार हों, एक-दूसरे के मुहाफ़िज़ बन जाएँ और सब मिलकर एक ही मक़सद के लिए कोशिश करें।

हुक्म की इताअत मतलूब है

फिर ज़्यादा गहरी नज़र से जब आप देखेंगे तो यह बात आप पर खुलेगी कि इतने बड़े मक़सद के लिए सिर्फ़ मुसलमानों का मिल जाना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि इसकी भी ज़रूरत है कि यह मिल जाना बिलकुल ठीक तरीक़े पर हो, यानी मुसलमानों की जमाअत इस तरह बने कि एक-दूसरे के साथ उनके ताल्लुक़ ठीक-ठीक जैसे होने चाहिएँ वैसे ही हों, उनके आपस के ताल्लुक़ में कोई ख़राबी न रहने पाए। उनमें पूरी एकता हो। वे एक सरदार की इताअत करें। उसके हुक्म पर हरकत करने की आदत उनमें पैदा हो और वे यह भी समझ लें कि अपने सरदार की फ़रमाँबरदारी उन्हें किस तरह और कहाँ तक करनी चाहिए और नाफ़रमानी के मौक़े कौन-कौन से हैं।

नमाज़ बाजमाअत के फ़ायदे

इन सब बातों को नज़र में रखकर देखिए कि जमाअत के साथ नमाज़ किस तरह ये सारे काम करती है।

एक आवाज़ पर इकट्ठा होना

हुक्म है कि अज़ान की आवाज़ सुनकर अपने तमाम काम छोड़ दो और मसजिद की तरफ़ आ जाओ। यह बुलावे की पुकार सुनकर हर तरफ़ से मुसलमानों का उठना और एक मरकज़ पर जमा हो जाना उनके अन्दर वही कैफ़ियत पैदा करता है जो फ़ौज की होती है। फ़ौजी सिपाही जहाँ-जहाँ भी हों, बिगुल की आवाज़ सुनते ही समझ लेते हैं कि हमारा कमाण्डर बुला रहा है। इस पुकार पर सबके दिल में एक ही कैफ़ियत पैदा होती है, यानी कमाण्डर के हुक्म की पैरवी का ख़याल। और इस ख़याल के मुताबिक़ सब एक ही काम करते हैं, यानी अपनी-अपनी ज़गह से उस आवाज़ पर दौड़ पड़ते हैं और हर तरफ़ से सिमटकर एक जगह इकट्ठा हो जाते हैं। फ़ौज में यह तरीक़ा किस लिए अपनाया गया है? इसी लिए कि अव्वल तो हर-हर सिपाही में अलग-अलग हुक्म मानने और उसपर मुस्तैदी के साथ अमल करने की ख़ूबी और आदत पैदा हो और फिर साथ ही साथ ऐसे तमाम फ़रमाँबरदार सिपाही मिलकर एक गरोह, एक जत्था, एक टीम भी बन जाएँ और

उनमें यह आदत भी पैदा हो जाए कि कमाण्डर के हुक्म पर एक ही वक़्त में एक ही जगह सब इकट्ठा हो जाया करें, ताकि जब कोई मुहिम पेश आए तो सारी फ़ौज एक आवाज़ पर एक मक़सद के लिए इकट्ठी होकर काम कर सके। ऐसा न हो कि सारे सिपाही अपनी-अपनी जगह तो बड़े तीसमार ख़ाँ हों, मगर जब काम के मौक़े पर उनको पुकारा जाए तो वे जमा होकर न लड़ सकें, बल्कि हर एक अपनी-अपनी मरज़ी के मुताबिक़ जिधर चाहे चला जाए। ऐसी हालत अगर किसी फ़ौज की हो तो उसके हज़ार बहादुर सिपाहियों को दुशमन के पचास सिपाहियों का एक दस्ता अलग-अलग पकड़ कर ख़त्म कर सकता है। बस इसी बुनियाद पर मुसलमानों के लिए भी यह क़ायदा मुक़र्रर किया गया है कि जो मुसलमान जहाँ अज़ान की आवाज़ सुने, सब काम-काज छोड़कर अपने क़रीब की मसजिद का रुख़ करे; ताकि सब मुसलमान मिलकर अल्लाह की फ़ौज बन जाएँ। इस तरह इकट्ठे होने की मश्क़ उनको रोज़ाना पाँच वक़्त कराई जाती है, क्योंकि दुनिया की सारी फ़ौजों से बढ़कर कड़ी ड्यूटी इस ख़ुदाई फ़ौज की है। दूसरी फ़ौजों के लिए तो मुद्दतों में कभी एक मुहिम पेश आती है और इसकी ख़ातिर उनको सारी फ़ौजी मश्क़ें कराई जाती हैं। मगर ख़ुदाई फ़ौज को हर वक़्त शैतानी ताक़तों से लड़ना है और हर वक़्त अपने कमाण्डर के हुक्मों को पूरा करना है, इसलिए

इसके साथ यह भी बहुत बड़ी रिआयत है कि उसे रोज़ाना सिर्फ़ पाँच बार खुदाई बिगुल की आवाज़ पर दौड़ने और खुदाई छावनी यानी मसजिद में इकट्ठा होने का हुक्म दिया गया है।

बामक़सद इजतिमा

यह तो सिर्फ़ अज़ान का फ़ायदा था। अब आप मसजिद में जमा होते हैं, और सिर्फ़ इस जमा होने में बेशुमार फ़ायदे हैं। यहाँ जो आप इकट्ठा हुए तो आपने एक-दूसरे को देखा, पहचाना, एक-दूसरे से वाक़िफ़ हुए। यह देखना, पहचानना, वाक़िफ़ होना किस हैसियत से है? इस हैसियत से कि आप सब खुदा के बन्दे हैं, एक रसूल *(सल्ल.)* के पैरौ हैं, एक किताब के माननेवाले हैं और एक ही मक़सद आप सबकी ज़िन्दगी का मक़सद है। इसी एक मक़सद को पूरा करने के लिए आप यहाँ इकट्ठा हुए हैं और इसी मक़सद को यहाँ से वापस जाकर भी आपको पूरा करना है। इस क़िस्म की आशनाई, इस क़िस्म की वाक़फ़ियत आप में खुद-बखुद यह ख़याल पैदा कर देती है कि आप सब एक जमाअत, एक गरोह और एक पार्टी हैं, एक ही फ़ौज के सिपाही हैं, एक-दूसरे के भाई हैं। दुनिया में आपके मक़सद, आपके नुक़सान और आपके फ़ायदे एक ही हैं और आपकी ज़िन्दगियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।

आपसी हमदर्दी

फिर आप जो एक-दूसरे को देखेंगे तो ज़ाहिर है कि आँखें खोलकर ही देखेंगे, और यह देखना भी दुश्मन का दुश्मन को देखना नहीं, बल्कि दोस्त को दोस्त का और भाई को भाई का देखना होगा। इस नज़र से जब आप देखेंगे कि मेरा कोई भाई फटे-पुराने कपड़ों में है, कोई परेशान हाल है, कोई भूखा है, कोई मजबूर है, कोई लंगड़ा-लूला या अन्धा है तो ज़रूर ही आपके दिल में हमदर्दी पैदा होगी। आपमें से जो खुशहाल हैं वे ग़रीबों और मजबूरों पर रहम खाएँगे। जो बदहाल हैं उन्हें अमीरों तक पहुँचने और उनसे अपना हाल कहने की हिम्मत पैदा होगी। किसी के बारे में मालूम होगा कि वह बीमार है या किसी मुसीबत में फँस गया है इसलिए मसजिद में नहीं आया तो उसकी बीमारपुर्सी को जाने का ख़याल पैदा होगा। किसी के मरने की ख़बर मिली तो सब मिलकर उसके लिए नमाज़े- जनाज़ा पढ़ेंगे और ग़म के मारे रिश्तेदारों के ग़म में शरीक होंगे। ये सब बातें आपके आपसी मुहब्बत को बढ़ानेवाली और एक-दूसरे का मददगार बनानेवाली हैं।

पाक मक़सद के लिए जमा होना

इसके बाद और ज़रा ग़ौर कीजिए। यहाँ जो आप इकट्ठा हुए हैं तो एक पाक जगह और पाक मक़सद

के लिए इकट्ठा हुए हैं। यह चोरों, शराबियों और जुआरियों की भीड़ नहीं है कि सबके दिल में नापाक इरादे भरे हुए हों। यह तो अल्लाह के बन्दों का इजतिमा है। अल्लाह की इबादत के लिए, अल्लाह के घर में, सब अपने ख़ुदा के सामने बन्दगी का इक़रार करने हाज़िर हुए हैं। ऐसे मौक़े पर पहले तो ईमानदार आदमी ख़ुद ही अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होता है, लेकिन अगर उसने कोई गुनाह अपने दूसरे भाई के सामने किया था और वह ख़ुद भी यहाँ मसजिद में मौजूद है तो सिर्फ़ उसकी निगाहों का सामना हो जाना ही उसके लिए काफ़ी है कि गुनाहगार अपने दिल में कट-कट जाए, और अगर कहीं मुसलमानों में एक-दूसरे को नसीहत करने का जज़बा भी मौजूद हो और वे जानते हों कि हमदर्दी व मुहब्बत के साथ एक-दूसरे की इसलाह किस तरह करनी चाहिए, तो यक़ीन जानिए कि यह इजतिमा बड़ी रहमत व बरकत का सबब बनेगा। इस तरह सब मुसलमान मिलकर एक-दूसरे की ख़राबियों को दूर करेंगे, एक-दूसरे की कमियों को पूरी करेंगे और पूरी जमाअत नेक और भले लोगों की जमाअत बनती चली जाएगी।

भाईचारा

ये सिर्फ़ मसजिद में इकट्ठा होने की बरकतें हैं। इसके बाद यह देखिए कि जमाअत के साथ नमाज़ अदा

करने में कितनी बरकतें छिपी हुई हैं। आप सब एक सफ़ (लाइन) में एक-दूसरे के बराबर खड़े होते हैं। न कोई बड़ा है न छोटा। न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। ख़ुदा के दरबार में ख़ुदा के सामने सब बराबर हैं। किसी का हाथ लगने और किसी के छू जाने से कोई नापाक नहीं होता। सब पाक हैं इसलिए कि सब इनसान हैं, एक ख़ुदा के बन्दे हैं और एक ही दीन के माननेवालें हैं। आपमें ख़ानदानों, क़बीलों, मुल्कों और ज़बानों का भी कोई फ़र्क़ नहीं। कोई सैयद है, कोई पठान है, कोई राजपूत है, कोई जाट है। कोई किसी मुल्क का रहनेवाला है, कोई किसी मुल्क का। किसी की ज़बान कुछ है और किसी की कुछ। मगर सब एक सफ़ में खड़े एक ख़ुदा की इबादत कर रहे हैं। इसका मतलब यह है कि सब एक क़ौम हैं। यह हसब, नसब, बिरादरियों और क़ौमों का बँटवारा सब झूठा है। सबसे बड़ा ताल्लुक़ आपके बीच ख़ुदा की बन्दगी और इबादत का ताल्लुक़ है। उसमें जब आप सब एक हैं तो फिर किसी मामले में भी क्यों अलग हों?

हरकात में यकसानियत

फिर जब आप एक सफ़ में कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़े होते हैं तो यह मालूम होता है कि एक फ़ौज अपने बादशाह के सामने ख़िदमत के लिए खड़ी है। सफ़ बाँधकर खड़े होने और मिलकर एक साथ हरकत करने

से आपके दिलों में एकता पैदा होती है। आपको यह मश्क़ कराई जाती है कि ख़ुदा की बन्दगी में इस तरह एक हो जाओ कि सबके हाथ एक साथ उठें और सबके पाँव एक साथ चलें, मानो आप दस-बीस या सौ या हज़ार आदमी नहीं हैं, बल्कि मिलकर एक आदमी की तरह बन गए हैं।

दुआएँ

इस जमाअत और इस सफ़बन्दी के बाद आप क्या करते हैं? एक ज़बान होकर अपने मालिक से यह अर्ज़ करते हैं—

इय्या-क नअबुदु व इय्याक-क नसतईन।

"हम सब तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद माँगते हैं।"

इहदिनस्सिरातल मुसतक़ीम।

"हम सबको सीधे रास्ते पर चला।"

रब्बना लकल हम्द।

"हमारे परवरदिगार! तेरे ही लिए तारीफ़ें हैं।"

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस-सालिहीन।

"हम सबपर सलामती हो और अल्लाह के तमाम नेक बन्दों पर।"

फिर नमाज़ ख़त्म करके आप एक-दूसरे के लिए

सलामती और रहमत की दुआ करते हैं—

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह।

इसका मतलब यह हुआ कि आप सब एक-दूसरे की भलाई चाहनेवाले हैं, सब मिलकर एक ही मालिक से सबकी भलाई के लिए दुआ करते हैं। आप अकेले-अकेले नहीं हैं। आपमें से कोई भी अकेला सब कुछ अपने ही लिए नहीं माँगता, बल्कि हर एक की यही दुआ है कि सबपर ख़ुदा का फ़ज़्ल हो, सबको एक ही सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ बख़्शी जाए और सब ख़ुदा की सलामती में शामिल हों। इस तरह यह नमाज़ आपके दिलों को जोड़ती है। आपके ख़यालात (विचारों) में एकता पैदा करती है और आप में एक-दूसरे की भलाई चाहने का जज़बा पैदा करती है।

इमाम के बिना जमाअत नहीं

मगर देख लीजिए कि जमाअत की नमाज़ आप कभी इमाम के बिना नहीं पढ़ते। दो आदमी भी मिलकर पढ़ेंगे तो एक इमाम होगा और दूसरा मुक़्तदी। जमाअत खड़ी हो जाए तो उससे अलग होकर नमाज़ पढ़ने से सख़्ती के साथ रोका गया है, बल्कि ऐसी नमाज़ होती ही नहीं। हुक्म है कि जो आता जाए, उसी इमाम के पीछे जमाअत में शरीक होता जाए। ये सब चीज़ें सिर्फ़ नमाज़ ही के लिए नहीं हैं, बल्कि असल में इनमें

आपको यह सबक़ दिया गया है कि मुसलमान की हैसियत से अगर ज़िन्दगी बसर करनी है तो इसी तरह जमाअत बनकर रहो। तुम्हारी जमाअत, जमाअत ही नहीं हो सकती जब तक कि तुम्हारा कोई इमाम न हो, और जमाअत जब बन जाए तो उससे अलग होने का मतलब यह है कि तुम्हारी ज़िन्दगी मुसलमानों की ज़िन्दगी नहीं रही।

इमामत की नौइयत और हक़ीक़त

सिर्फ़ इसी पर बस नहीं किया गया है, बल्कि जमाअत में इमाम और मुक़्तदियों का ताल्लुक़ इस तौर पर क़ायम किया गया जिससे आपको मालूम हो जाए कि इस छोटी मसजिद के बाहर उस बहुत बड़ी मसजिद में जिसका नाम 'ज़मीन' है, आपके इमाम की हैसियत क्या है? उसके फ़राइज़ क्या हैं, उसके हुक़ूक़ क्या हैं? आपको किस तरह उसकी इताअत करनी चाहिए और किन बातों में करनी चाहिए? अगर वह ग़लती करे तो आप क्या करें, कहाँ तक आपको ग़लती में भी उसकी पैरवी करनी चाहिए, कहाँ आप उसको टोकने के हक़दार हैं? कहाँ आप उससे मुतालबा कर सकते हैं कि अपनी ग़लती का सुधार करे और किस मौक़े पर आप उसको इमामत से हटा सकते हैं? ये सब मानो छोटे पैमाने पर एक बड़ी सल्तनत को चलाने की मश्क़ है,

जो हर रोज़ पाँच बार आपसे हर छोटी-बड़ी मसजिद में कराई जाती है।

इमामत की शर्तें और आदाब

यहाँ इतना मौक़ा नहीं कि मैं इन सारी तफ़सीलों को बयान करूँ, मगर कुछ मोटी मोटी बातें बयान करता हूँ—

(1) मुत्तक़ी और परहेज़गार

हुक्म है कि इमाम ऐसे शख़्स को बनाया जाए जो परहेज़गार हो, इल्म में ज़्यादा हो, क़ुरआन ज़्यादा जानता हो और ज़्यादा उम्र का भी हो। हदीस में तरतीब भी बता दी गई है कि इन सिफ़ात में कौन-सी सिफ़त किस सिफ़त पर मुक़द्दम है। यहीं से यह तालीम भी दे दी गई कि क़ौम के सरदार के चुनाव में किन बातों पर ध्यान देना चाहिए।

(2) अकसरीयत का नुमाइंदा

हुक्म है कि इमाम ऐसा आदमी न हो जिससे जमाअत की बड़ी तादाद नाराज़ हो। यूँ तो थोड़े-बहुत मुख़ालिफ़ किसके नहीं होते, लेकिन जमाअत में अक्सर लोग किसी शख़्स से नफ़रत रखते हों तो उसे इमाम न बनाया जाए। यहाँ फिर क़ौम के सरदार के चुनाव का एक क़ायदा बता दिया गया।

(3) मुक़तदियों का हमदर्द

हुक्म है कि जो आदमी जमाअत का इमाम बनाया जाए वह नमाज़ ऐसी पढ़ाए कि जमाअत के बहुत बूढ़े लोगों को भी तकलीफ़ न हो। सिर्फ़ जवान, मज़बूत, तन्दुरुस्त और फ़ुर्सतवाले आदमियों को ही सामने रखकर लम्बी-लम्बी क़िरअत और लम्बे-लम्बे रुकूअ और सजदे न करने लगे। बल्कि यह भी देखे कि जमाअत में बूढ़े भी हैं, बीमार भी हैं, कमज़ोर भी हैं और ऐसे मशग़ूल भी हैं जो जल्दी नमाज़ पढ़कर अपने काम पर वापस जाना चाहते हैं। नबी *(सल्ल.)* ने इस सिलसिले में यहाँ तक रहम और शफ़क़त का नमूना पेश फ़रमाया है कि नमाज़ पढ़ाते वक़्त किसी बच्चे के रोने की आवाज़ आ जाती तो नमाज़ मुख़्तसर कर देते थे, ताकि अगर बच्चे की माँ जमाअत में शरीक हो तो उसे तकलीफ़ न हो। यह गोया क़ौम के सरदार को तालीम दी गई है कि जब वह सरदार बनाया जाए तो क़ौम के अन्दर उसका तर्ज़े-अमल कैसा होना चाहिए।

(4) मजबूरी में जगह ख़ाली कर दे

हुक्म है कि इमाम को अगर नमाज़ पढ़ाते वक़्त कोई ऐसी बात पेश आ जाए जिसकी वजह से वह नमाज़ पढ़ाने के क़ाबिल न रहे तो फ़ौरन हट जाए और अपनी

जगह पर पीछे के आदमी को खड़ा कर दे। इसका मतलब यह है कि क़ौम के सरदार का भी यही फ़र्ज़ है कि जब वह सरदारी के क़ाबिल अपने आपको न पाए तो उसे ख़ुद हट जाना चाहिए और दूसरे ज़्यादा क़ाबिल आदमी के लिए जगह ख़ाली कर देनी चाहिए। इसमें न शर्म का कुछ काम है, न ख़ुदग़र्ज़ी का।

(5) इमाम की मुकम्मल इताअत

हुक्म है कि इमाम के कामों की सख़्ती के साथ पाबन्दी करो। उसकी हरकत से पहले हरकत करने को सख़्ती के साथ मना किया गया है; यहाँ तक कि जो शख़्स इमाम से पहले रुकूअ या सजदे में आ जाए, उसके बारे में हदीस में आया है कि वह गधे की सूरत में उठाया जाएगा। यहाँ गोया क़ौम को सिखाया गया है कि उसे अपने सरदार की इताअत किस तरह करनी चाहिए।

(6) ग़लती पर तंबीह

इमाम अगर नमाज़ में ग़लती करे, मिसाल के तौर पर जहाँ उसे बैठना चाहिए था वहाँ खड़ा हो जाए, या जहाँ खड़ा होना चाहिए था वहाँ बैठ जाए तो हुक्म है कि 'सुब्हानल्लाह' कहकर उसे ग़लती पर चौकस कर दो। सुब्हानल्लाह का मतलब है "अल्लाह पाक है"।

इमाम की ग़लती पर सुब्हानल्लाह कहने का मतलब यह हुआ कि ग़लती से तो सिर्फ़ अल्लाह ही पाक है, तुम इनसान हो, तुमसे भूल-चूक हो जाना कोई ताज्जुब की बात नहीं। यह तरीक़ा है इमाम को टोकने का। और जब इस तरह उसे टोका जाए तो उसपर लाज़िम है कि बिना किसी शर्म व लिहाज़ के अपनी ग़लती का सुधार करे, अलबत्ता अगर टोके जाने के बाद भी इमाम को यक़ीन हो कि उसने सही काम किया है तो वह अपने यक़ीन के मुताबिक़ अमल कर सकता है और इस सूरत में जमाअत का काम यह है कि इस अमल को ग़लत जानने के बाद भी उसका साथ दे। नमाज़ ख़त्म होने के बाद मुक़्तदी हक़ रखते हैं कि इमाम पर उसकी ग़लती साबित करें और नमाज़ दुबारा पढ़ाने की उससे माँग करें।

(7) बड़ी ग़लती और गुनाह में इताअत नहीं

इमाम के साथ जमाअत का यह बरताव सिर्फ़ उन हालतों के लिए है जबकि ग़लती छोटी-छोटी बातों में हो। लेकिन अगर इमाम नबी *(सल्ल.)* की सुन्नत के ख़िलाफ़ नमाज़ की तरकीब बदल दे या नमाज़ में क़ुरआन को जान-बूझकर ग़लत पढ़े या नमाज़ पढ़ाते हुए कुफ़्र या शिर्क या खुला गुनाह करे तो जमाअत का फ़र्ज़ है कि उसी वक़्त नमाज़ तोड़कर इमाम से अलग

हो जाए।

ये सब हिदायतें ऐसी हैं जिनमें पूरी तालीम दे दी गई है कि तुमको अपनी क़ौमी ज़िन्दगी में अपने सरदार के साथ किस तरह पेश आना चाहिए।

मुसलमान भाइयो! ये फ़ायदे जो मैंने नमाज़ बाजमाअत के बयान किए हैं, उनसे आपने अन्दाज़ा किया होगा कि अल्लाह तआला ने इस एक इबादत में जो दिन भर में पाँच बार सिर्फ़ कुछ मिनट के लिए अदा की जाती है, किस तरह दुनिया व आख़िरत की तमाम भलाइयाँ आपके लिए जमा कर दी हैं, किस तरह यही एक चीज़ आपको तमाम सआदतों से मालामाल कर देती है और किस तरह यह आपको अल्लाह की ग़ुलामी और दुनिया की हुक्मरानी के लिए तैयार करती है।

अब आप ज़रूर सवाल करेंगे कि जब नमाज़ ऐसी चीज़ है तो जो फ़ायदे तुम इसके बयान करते हो, ये हासिल क्यों नहीं होते? इसका जवाब अगर अल्लाह ने चाहा तो अगले ख़ुतबे में दिया जाएगा।

☆☆☆